कालिदास के नाटकों में वर्णित चित्रकला

डॉ0 स्मिता अग्रवाल

कालिदास के काव्यों के वर्णन से हमें स्थान–स्थान पर उनके कलात्मक बोध का परिचय प्राप्त होता है। कालिदास के काव्यों में श्रृंगार की प्रधानता होने के कारण ललितकलाओं का वर्णन प्रधान रूप से प्राप्त होता है। ललित कलाओं के साथ–साथ अन्य कलाएँ जैसे– कामकला, गज–अश्व–रथ कौशल, मृगया, कृषि आदि का वर्णन भी प्राप्त है। कालिदास के अधिकांश, नाटकों–काव्यों में श्रृंगार की प्रधानता होने के कारण चित्रकला, संगीत–नृत्य–वाद्य आदि सुकोमल कलाओं का वर्णन अधिक प्राप्त होते हैं। कालिदास के नाटकों में प्राप्त चित्र तथा चित्रकला के प्राप्त वर्णनों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज को चित्रकला के सम्बन्ध में यथेष्ट ज्ञान प्राप्त था। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में चित्रकला के सम्बन्ध में अनेक सुन्दर वर्णन दुष्यन्त तथा अन्य की उक्तियों के माध्यम से प्राप्त होते हैं।

कालिदास के नाटकों में अनेक कलाओं का दिग्दर्शन होता है, परन्तु नाटकों में वर्णित चित्रकला के प्रसप्रों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि निश्चय ही तत्कालीन समय में चरम कोटि पर थी। कालिदास ने न केवल प्रकृति का वरन् मन के भावों का भी चित्रण किया है।